بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 07.10.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

सम्पूर्ण आत्मविश्वास के साथ और अल्लाह तआला की कृपाओं को उसके आगे झुकते हुए, मांगते हुए हमें दुनिया के मार्ग दर्शन का काम करना होगा।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः तथा सूरः आराफ़ की आयत सं. तीस से बत्तीस तक तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया कि-

इन आयतों का अनुवाद है कि ''तू कह दे कि मेरे रब ने न्याय करने का आदेश दिया है तथा यह कि तुम प्रत्येक मस्जिद में अपना ध्यान (अल्लाह की ओर) सीधा रखो तथा दीन को उसके लिए विशिष्ट करते हुए उसी को पुकारो। जिस तरह उसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, उसी तरह तुम (मरने के बाद) लौटोगे। एक दल को उसने हिदायत प्रदान की तथा एक दल पर गुमराही अनिवार्य हो गई। निस्संदेह यही वे लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बना लिया तथा ये समझते हैं कि ये हिदायत पर हैं। ऐ आदम के बेटो! हर एक मस्जिद में अपनी ज़ीनत (शोभा, अर्थात तक़्वा का लिबास) साथ ले जाया करो, और खाओ और पियो परन्तु सीमा का उल्लंघन मत करो, निःसन्देह वह सीमाएँ लांघने वालों को पसन्द नहीं करता''

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आज आपको अपनी मस्जिद के निर्माण का सामर्थ्य मिल रहा है, यद्यपि इसका निर्माण तो कुछ समय पूर्व पूरा गया था किन्तु इसका औपचारिक उद्घाटन आज हो रहा है। जिन्होंने इस मस्जिद के निर्माण में सहयोग दिया है अल्लाह तआला उन सबको इस मस्जिद का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, अल्लाह करे यह मस्जिद आपने अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए बनाई हो तथा अल्लाह की प्रसन्नता इंसान तब प्राप्त करता है जब उसके आदेशों के अनुसार चलने वाला हो, उसकी इबादत तथा उसके बन्दों के हक़ अदा करने वाला हो। हमें सदैव याद रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आना हम पर अत्यधिक भारी दायित्व डालता है। इस मस्जिद का आबाद रखना, आपस में प्यार मुहब्बत से रहना तथा सदभावना एवं भाईचारे को बढ़ाना हमारा दायित्व है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जहाँ इस्लाम को परिचित कराने का उद्देश्य हो, वहाँ मस्जिद बना दो। अतएव इस मस्जिद से इस क्षेत्र में इस्लाम का रस्मी परिचय तो हो जाएगा, तबलीग़ के रास्ते भी खुलेंगे परन्तु हर अहमदी को इस्लाम की शिक्षाओं का नमूना भी बनना पड़ेगा।

ये आयतें जो मैंने तिलावत की हैं इनमें अल्लाह तआला ने मस्जिदों के साथ जुड़ने वालों की कुछ ज़िम्मेदारियाँ बयान फ़रमाई हैं। सबसे पहले तो फ़रमाया कि न्याय स्थापित करो, अर्थात- मस्जिदों में आने वालों को सबसे पहले यह उपदेश दिया कि बन्दों के हक़ अदा करने के सामान पैदा करो तथा उसमें सबसे पहले न्याय की स्थापना है। यदि कोई व्यक्ति घर में बीवी बच्चों के साथ सुन्दर व्यवहार नहीं करता तो ऐसे व्यक्ति के जमाअती काम तथा इबादतें किसी काम नहीं आएँगी। किसी को इस बात का घमंड नहीं होना चाहिए कि मैं बहुत नमाज़ें पढ़ने वाला तथा जमाअती काम करने वाला हूँ। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो बन्दों को उनके अधिकार से वंचित रखता है वह अल्लाह के हक़ भी नहीं अदा करता।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुमने अल्लाह के आदेशों के अनुसार कर्म न किए, दीन को अल्लाह तआला के लिए विशिष्ट करते हुए अपनी हालतों में बदलाव का प्रयास न किया तो शैतान तुम पर क़ब्ज़ा कर लेगा। आजकल के इस दुनियादारी के वातावरण में इस ओर ध्यान देने की अत्यधिक आवश्यकता है। मुसलमानों का पतन तब ही हुआ जब न्याय को छोड़ कर ख़ुदा की इबादतों को केवल दिखावा बना लिया गया। मस्जिदों की प्रत्यक्ष सुन्दरता पर अधिक ज़ोर दिया गया तथा इबादतों की मूल आत्मा को भुला दिया गया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि भीतरी रूप से इस्लाम की स्थिति अत्यंत दुर्बल हो गई है तथा बाहर स हमला करन वाले चाहते हैं कि इस्लाम को मिटा दें। उनकी दृष्टि में मुसलमान सुअरों तथा कुत्तों से भी अधिक बुरे हैं। अब ख़ुदा की किताब के बिना तथा उसके समर्थन एवं रोशन निशानों के अतिरिक्त उनका मुक़ाबला सम्भव नहीं तथा इसी उद्देश्य के लिए ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से इस सिलसिले को स्थापित किया ह। अतः आज सम्पूर्ण आत्मविश्वास के साथ तथा अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को उसके आगे झुकते हुए मांगते हुए हमें दुनिया के मार्ग दर्शन का काम करना होगा।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हम ही हैं जिन्होंने इस्लाम की खोई हुई साख को पुनः स्थापित करना है। हमें सम्पूर्ण आत्मविश्वास के साथ तथा अल्लाह तआला के आदेशों पर झुकते हुए दुनिया के मार्ग दर्शन का काम करना होगा, क्यूँकि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वाले हैं जिन्हें दुनिया को जीवन देने के लिए, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा को दुनिया में फैलाने के लिए भेजा है। अब इस शिक्षानुसार कर्म करने पर ही मुक्ति है। आख़िरत में इंसान यदि ख़ालो हाथ जाए तो अल्लाह तआला की नाराज़गी का सामना करना होगा और फिर वह क्या व्यवहार करता है, यह वही जानता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हमें याद रखना चाहिए कि जब हम दुनिया को इस विवरण से सावधान करेंगे तो हमारी प्रत्येक कथनी करनी भी इस शिक्षा के अनुसार हा, हमारी इबादतों तथा हमारे बन्दों के अधिकार उनको देने के उच्च स्तरीय कर्म हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इस समय इस्लाम जिस चीज़ का नाम है उसमें अन्तर आ गया है। उच्च आचरण वाली कोई अवस्था नहीं रही, ख़ुदा की वफ़ादारी तथा स्नेह गुम हो गए हैं। अब ख़ुदा ने इरादा किया है कि वह इनको नए सिरे से जीवित करे। इस्लाम की इस अवस्था को बल देने के लिए हम ख़ुदा के भेजे हुए दूत के साथ जुड़े हुए हैं। आज

हम ही हैं जिन्होंने ख़ुदा के साथ वफ़ादारी के उच्च स्तर स्थापित करने हैं, निष्ठा एवं आज्ञा पालन के साथ वफ़ादारी को पूरा करना है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला पर पूरा भरोसा होना चाहिए कि हर काम का बनाने वाला ख़ुदा है। अब इस्लाम ही दुनिया पर छा जाने वाला धर्म है इसके लिए हमने अपनी सम्पूर्ण प्रतिभाओं को काम में लाना है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सुलताने नसीर बनना है। ख़ुदा ने जो वादे मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स किए हैं वे पूरे होने हैं। यदि हम लोग इसमें सहयोगी नहीं बनेंगे तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को पाने वाले नहीं बनेंगे। यदि हम आगे न बढ़े तो अल्लाह तआला कोई और लोग सहयता करने के लिए भेज देगा क्यूँकि काम तो यह होना है। अतः हमें अपनी अवस्थाओं, कमियों तथा दुर्बलताओं को दूर करने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अब यह ज़माना है कि इसमें दिखावा, घमंड, अहंकार, घृणा इत्यादि तो उन्नति कर गए हैं तथा दिव्य गुण आसमान पर उठ गए हैं। अल्लाह पर भरोसा और युक्ति के उपाय नष्ट हो गए हैं परन्तु अब ख़ुदा का इरादा है इनका बीज बोया जाए। अल्लाह तआला अपने बन्दों को नष्ट नहीं करता। उसने अब यह निश्चय कर लिया है कि नेकियाँ उन्नति करें तथा बुराईयाँ समाप्त हों। अतः हमें निरीक्षण करना चाहिए कि क्या हम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस मिशन को पूरा करने के लिए नेकियाँ अपनाने और इबादतों के उच्च स्तरों और अल्लाह तआला के फ़ज्लों को पाने के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं? यदि हम निष्ठा पूर्वक इबादतों के साथ ऐसा नहीं कर रहे तो फिर इन बातों को पाने की अभिलाषा व्यर्थ है। अतएव बड़ी गहराई से निरीक्षण करने, इस्तिग़फ़ार करने तथा अपने कर्म निरन्तर अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए अदा करने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि कर्मों के लिए निष्ठा शर्त है, यह उन लोगों में होती है जो अबदाल होते हैं। अतएव ख़ूब याद रखो कि जो व्यक्ति ख़ुदा का हो जाए, ख़ुदा उसका हो जाता है। अतः यह उपाय अपनाने की आवश्यकता है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला तो दयावान है कि हमारी ग़लतियों के बावजूद अपनी अनुकम्पा प्रदान करता है। यह निरीक्षण करें कि किस प्रकार हमने ख़ुदा के हक़ अदा करने हैं और सबसे बड़ा हक़ यह है कि उसकी इबादत का हक़ अदा करें, मस्जिद बनाकर उसका हक़ अदा करें, शुद्ध होकर उसमें इबादत के लिए आएँ। स्थाई ध्यान पूर्वक अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करनी होगी और यह उस समय होगा जब अल्लाह तआला से मुहब्बत हो, ऐसी व्यक्तिगत मुहब्बत जो किसी और से न हो, ऐसी मुहब्बत एक इन्क़लाब ले आती है। जो लोग थोड़ी सी दुआ के बाद थक जाते हैं तथा जो ख़ुदा से सम्बंध स्थापित करना चाहते हैं उन्हें इन बातों पर विचार करना चाहिए। अतः केवल आवश्यकता पड़ने पर ख़ुदा से मांगने न जाएँ बल्कि अल्लाह तआला से व्यक्तिगत प्रेम पैदा करें, फिर अल्लाह तआला ऐसे इंसान से मुहब्बत करता है। जब ये दो मुहब्बतें मिलती हैं तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की ऐसी बारिश बरसती है जो इंसान के विचार से भी ऊपर है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि जो लोग अपनी मूल तथा प्रकृतिक आवश्यकता को छोड़ कर पशुओं की तरह खाना पीना तथा सो रहना ही जीवन समझते हैं वे फिर ख़ुदा से दूर हो जाते हैं। दायित्वों से परिपूर्ण जीवन यह है कि इबादत को अपना लक्ष्य एवं उद्देश्य बना ले, मौत का भरोसा नहीं। हज़रत मसीह मौऊद

अलै. फ़रमाते ह कि इस बात को समझ लो कि ख़ुदा की इबादत करना तुम्हारा मूल उद्देश्य हो, दुनिया तुम्हारा वास्तविक लक्ष्य न हो, सन्यास इस्लाम में वांछित नहीं, ये सब कारोबार जो करते हो उसमें ख़ुदा तआला की ख़ुशी प्राप्ति तुम्हारा उद्देश्य हो। अतः बड़े ध्यान और विचार करने का समय है, यदि हम हज़रत मसीह मौऊद अलै. की बैअत का दावा करके अपने जीवन के उद्देश्य को भूल जाते हैं तो हमारी बैअत व्यर्थ है, हमारे शब्द खोखले हैं। अतः हर अहमदी को ख़ूब विचार करना चाहिए, सोचें, निरीक्षण करें तथा देखें कि पूरे दिन में कितने मिन्ट अल्लाह तआला की इबादत को देते हैं। अपने जीवन के उद्देश्य को न भूलो, यदि हम इन बातों को भूल जाते हैं तो फिर हमारी बैअत लाभकारी नहीं है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आजकल के इस आधुनिक युग में पाँच नमाज़ें अदा न करने का जो बहाना लोग पेश करते हैं, ये विचारों का दुरुपयोग है तथा यह दुरुपयोग अल्लाह से दूर ले जाता है। यूँ मुसलमान और अहमदी होने के दावे ही केवल ज़बानी दावे रह जाएँगे, अमल कोई न होगा। वास्तविक मोमिन दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देता है तथा इसके परिणाम स्वरूप अल्लाह उसके लिए आजीविका के द्वार खोल देता है। जो ऐसा नहीं करता तो उसको सांसारिकता की आग लग जाती है जो बुझती नहीं और इंसान को भस्म कर देती है। अल्लाह की मस्जिदों को वही लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाते हैं, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की अदायगी की चिंता तथा प्रतीक्षा में रहते हैं। यही उपाय है जो मस्जिदों को आबाद करता है, अपनी तथा अपनी नस्लों की तर्बियत का मार्ग है तथा इस दौर की नकारात्मक चीज़ों से भी बचा सकता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि इस मस्जिद के उद्घाटन से अब और अधिक रास्ते खुलेंगे, उनको पूर्णतः उपयोग में लाकर इस मस्जिद को आबाद करने के लिए लोगों को इस्लाम अहमदियत का सन्देश दें। जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि जहाँ मस्जिद बन गई, वहाँ इस्लाम की बुनियाद बन गई। इस लिए अब मस्जिद बन गई है तो इसकी आबादी की ओर ध्यान दें कि मस्जिद की आबादी केवल लोगों की हाज़िरी से ही नहीं बल्कि निष्ठा एवं श्रद्धा पूर्वक नमाज़ अदा करने वालों से होती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने ख़ुत्बः जुम्अः के अंत में फ़रमाया- अल्लाह करे कि इस मस्जिद को बनाने वाले इसको वास्तविक अर्थों में आबाद करने वाले बनें तथा इससे अपनी सांसारिक एवं आख़िरत के जीवन हम संवारने वाले बनें, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131